Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 3, Issue 3, July-September, 2025
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
ISSN : 3048-6971 (ONLINE)

1942 की क्रांति में 'आजाद दस्ता' और जयप्रकाश नारायण की रणनीति : एक विश्लेषण

ज्योति कुमारी , शोधार्थी, इतिहास विभाग, बी0आर0 अंबेडकर बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर
jyotimuz80@gmail.com

सारांश

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का ऐसा निर्णायक मोड़ था जिसने ब्रिटिश औपनिवेशिक सत्ता की वैधता को गहराई से चुनौती दी। इस आंदोलन के दौरान जब कांग्रेस का केंद्रीय नेतृत्व गिरफ्तार कर लिया गया, तब भूमिगत संगठनों और समाजवादी कार्यकर्ताओं ने आंदोलन को जीवित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इसी संदर्भ में 'आजाद दस्ता' का उदय हुआ, जिसका नेतृत्व जयप्रकाश नारायण ने किया। बिहार तथा नेपाल सीमा क्षेत्र में सक्रिय इस संगठन ने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विकेन्द्रित प्रतिरोध, गुप्त संगठन, प्रशासनिक अवरोध और जन-राजनीतिक चेतना के निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य 'आजाद दस्ता' की ऐतिहासिक भूमिका, संगठनात्मक संरचना तथा जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक रणनीति का आलोचनात्मक विश्लेषण करना है। अध्ययन में ऐतिहासिक-विश्लेषणात्मक पद्धति का उपयोग करते हुए यह प्रतिपादित किया गया है कि जयप्रकाश नारायण ने गांधीवादी जन-आंदोलन और समाजवादी क्रांतिकारी राजनीति के बीच एक व्यावहारिक समन्वय स्थापित किया। शोध यह भी स्पष्ट करता है कि 'आजाद दस्ता' केवल एक भूमिगत संगठन नहीं था, बल्कि वह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में वैकल्पिक जन-नेतृत्व, ग्रामीण राजनीतिक चेतना और प्रतिरोध की नई संस्कृति का प्रतीक था।

मुख्य शब्दः भारत छोड़ो आंदोलन, आजाद दस्ता, जयप्रकाश नारायण, भूमिगत आंदोलन, समाजवादी राजनीति, बिहार, 1942 की क्रांति

प्रस्तावना

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में 1942 का भारत छोड़ो आंदोलन केवल एक राजनीतिक अभियान नहीं था, बल्कि वह औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध व्यापक जन-प्रतिरोध का विस्फोट था। द्वितीय विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि, ब्रिटिश सरकार की दमनात्मक नीतियाँ तथा भारतीय जनता की राजनीतिक आकांक्षाओं की निरंतर उपेक्षा ने भारतीय समाज में गहरा असंतोष उत्पन्न कर दिया था। क्रिप्स मिशन की असफलता ने यह स्पष्ट कर दिया कि ब्रिटिश सत्ता भारत को वास्तविक स्वतंत्रता देने के पक्ष में नहीं थी (Sarkar, 1983, p. 412)। ऐसी परिस्थिति में महात्मा गांधी ने 8 अगस्त 1942 को "करो या मरो" का आह्वान किया, जिसने पूरे देश में व्यापक राजनीतिक उथल-पुथल उत्पन्न कर दी।

भारत छोड़ो आंदोलन की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह थी कि कांग्रेस नेतृत्व की तत्काल गिरफ्तारी के बाद आंदोलन स्वतःस्फूर्त एवं विकेन्द्रित स्वरूप ग्रहण करने लगा। यही वह ऐतिहासिक क्षण था जब समाजवादी धारा के नेताओं—विशेषकर जयप्रकाश नारायण, राममनोहर लोहिया और अच्युत पटवर्धन—ने भूमिगत प्रतिरोध को संगठित करने का प्रयास किया। बिहार इस आंदोलन का सबसे उग्र और सक्रिय क्षेत्र बनकर उभरा। यहाँ 'आजाद दस्ता' नामक भूमिगत संगठन ने ब्रिटिश प्रशासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध की रणनीति अपनाई।

जयप्रकाश नारायण की भूमिका इस संदर्भ में अत्यंत महत्वपूर्ण थी। वे केवल एक राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं थे, बल्कि एक वैचारिक रणनीतिकार भी थे जिन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन को समाजवादी दृष्टिकोण से पुनर्परिभाषित करने का प्रयास किया। उनका मानना था कि स्वतंत्रता केवल राजनीतिक सत्ता-हस्तांतरण नहीं है, बल्कि सामाजिक एवं आर्थिक न्याय की स्थापना भी है (Narayan, 1978, p. 39)। इस प्रकार 'आजाद दस्ता' उनके नेतृत्व में एक ऐसे संगठन के रूप में विकसित हुआ जिसने गांधीवादी अहिंसा और क्रांतिकारी प्रतिरोध के बीच एक मध्यवर्ती राजनीतिक पथ निर्मित किया।

शोध के उद्देश्य

इस शोध-पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं—

- 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विश्लेषण करना।
- 'आजाद दस्ता' की संगठनात्मक संरचना एवं गतिविधियों का अध्ययन करना।
- जयप्रकाश नारायण की राजनीतिक एवं रणनीतिक दृष्टि का मूल्यांकन करना।
- भूमिगत आंदोलन की ऐतिहासिक प्रासंगिकता और सीमाओं का आलोचनात्मक विश्लेषण करना।

शोध पद्धति

यह अध्ययन ऐतिहासिक एवं विश्लेषणात्मक पद्धति पर आधारित है। शोध में प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों प्रकार के स्रोतों का उपयोग किया गया है। प्राथमिक स्रोतों में जयप्रकाश नारायण के वक्तव्य, ब्रिटिश प्रशासनिक रिपोर्टें तथा भारत छोड़ो आंदोलन से संबंधित दस्तावेज सम्मिलित हैं। द्वितीयक स्रोतों में इतिहासकारों की पुस्तकों, शोध-पत्रों तथा राजनीतिक विश्लेषणों का उपयोग किया गया है। अध्ययन में इतिहासलेखन (Historiography) की पद्धति को भी अपनाया गया है, जिसके माध्यम से विभिन्न इतिहासकारों के दृष्टिकोणों का तुलनात्मक परीक्षण किया गया है।

साहित्य समीक्षा

1942 के भारत छोड़ो आंदोलन और जयप्रकाश नारायण की भूमिका को लेकर इतिहासकारों के बीच विभिन्न मत रहे हैं। बिपिन चंद्र और सुमित सरकार जैसे राष्ट्रवादी इतिहासकार इस आंदोलन को भारतीय जन-राजनीति के चरम रूप के रूप में देखते हैं। सरकार के अनुसार भारत छोड़ो आंदोलन ने पहली बार ब्रिटिश प्रशासन की वैधता को व्यापक स्तर पर चुनौती दी (Sarkar, 1983, p. 417)।

दूसरी ओर, मार्क्सवादी इतिहासकारों का एक वर्ग मानता है कि आंदोलन की रणनीति पर्याप्त रूप से संगठित नहीं थी और इसमें वर्गीय नेतृत्व की स्पष्टता का अभाव था। हालांकि वे यह स्वीकार करते हैं कि जयप्रकाश नारायण और समाजवादी धारा ने आंदोलन को ग्रामीण क्षेत्रों तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई (Zachariah, 2004, p. 121)।

कुछ उपनिवेशवादी इतिहासकारों ने 'आजाद दस्ता' को सीमित प्रभाव वाला भूमिगत संगठन माना है, किंतु आधुनिक भारतीय इतिहासलेखन में यह धारणा व्यापक रूप से अस्वीकार की जा चुकी है। वर्तमान इतिहासकारों का मत है कि इस संगठन का महत्व उसकी सैन्य क्षमता में नहीं, बल्कि उसके प्रतीकात्मक और राजनीतिक प्रभाव में निहित था (Brown, 1994, p. 319)।

समाजवादी राजनीति और भारत छोड़ो आंदोलन

1930 के दशक में भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के भीतर समाजवादी विचारधारा का प्रभाव तीव्र गति से बढ़ा। 1934 में कांग्रेस सोशलिस्ट पार्टी (CSP) की स्थापना हुई, जिसका उद्देश्य कांग्रेस के भीतर समाजवादी दृष्टिकोण को मजबूत करना था। जयप्रकाश नारायण इस संगठन के प्रमुख वैचारिक नेता थे।

जयप्रकाश नारायण का राजनीतिक चिंतन मार्क्सवाद, गांधीवाद और लोकतांत्रिक समाजवाद के समन्वय पर आधारित था। वे मानते थे कि स्वतंत्रता आंदोलन को केवल उच्चवर्गीय नेतृत्व के भरोसे नहीं छोड़ा जा सकता; किसानों, मजदूरों और युवाओं को उसका सक्रिय भागीदार बनाना आवश्यक है (Varma, 2002, p. 291)।

द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार की नीतियों ने भारतीय जनता में गहरा असंतोष उत्पन्न किया। जब कांग्रेस नेतृत्व गिरफ्तार हुआ, तब समाजवादी नेताओं ने भूमिगत नेटवर्क के माध्यम से आंदोलन को जारी रखने का प्रयास किया। यही वह ऐतिहासिक परिस्थिति थी जिसमें 'आजाद दस्ता' का गठन हुआ।

आजाद दस्ता का गठन और संगठनात्मक संरचना

'आजाद दस्ता' का गठन भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान ब्रिटिश शासन के विरुद्ध भूमिगत प्रतिरोध को संगठित करने के उद्देश्य से किया गया था। इसका मुख्य उद्देश्य प्रशासनिक ढाँचे को बाधित करना, जनता को संगठित करना तथा औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध वैकल्पिक प्रतिरोध विकसित करना था।

नवंबर 1942 में जयप्रकाश नारायण ने हजारीबाग केंद्रीय कारागार से अपने साथियों सहित साहसिक पलायन किया।[1] यह घटना भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। जेल से निकलने के बाद उन्होंने नेपाल सीमा क्षेत्र में भूमिगत संगठनात्मक गतिविधियों का संचालन प्रारंभ किया (Sen, 1997, p. 356)।

'आजाद दस्ता' का संगठनात्मक ढाँचा पूर्णतः गोपनीय था। सदस्यों को छोटे समूहों में विभाजित किया गया ताकि गिरफ्तारी की स्थिति में पूरा नेटवर्क उजागर न हो सके। संगठन के सदस्य मुख्यतः युवा समाजवादी, विद्यार्थी तथा ग्रामीण कार्यकर्ता थे।

नेपाल सीमा का उपयोग सुरक्षित आश्रय तथा संपर्क मार्ग के रूप में किया गया। इससे ब्रिटिश प्रशासन के लिए संगठन की गतिविधियों को नियंत्रित करना कठिन हो गया। संगठन ने संदेशों के गुप्त आदान-प्रदान, संचार अवरोध तथा स्थानीय जन-संगठन पर विशेष ध्यान दिया।

जयप्रकाश नारायण की रणनीति:

- **विकेन्द्रित प्रतिरोध की रणनीति**

जयप्रकाश नारायण ने अनुभव किया कि ब्रिटिश दमन के सामने केंद्रीकृत नेतृत्व टिक नहीं सकता। इसलिए उन्होंने विकेन्द्रित प्रतिरोध की रणनीति अपनाई। छोटे-छोटे स्थानीय समूहों के माध्यम से आंदोलन को जारी रखा गया। यह रणनीति आधुनिक गुरिल्ला राजनीतिक आंदोलनों की कार्यप्रणाली से मेल खाती थी। हालांकि जयप्रकाश नारायण का उद्देश्य सशस्त्र युद्ध छेड़ना नहीं था, बल्कि औपनिवेशिक

प्रशासन को बाधित करना था। उनका मानना था कि यदि जनता को स्थानीय स्तर पर नेतृत्व दिया जाए, तो आंदोलन अधिक व्यापक और टिकाऊ बन सकता है। यही कारण था कि ‘आजाद दस्ता’ ने ग्रामीण क्षेत्रों में गहरी पैठ बनाई।

- **समाजवादी दृष्टिकोण और जन-राजनीति**जयप्रकाश नारायण की राजनीति का केंद्रीय तत्व समाजवादी दृष्टिकोण था। वे स्वतंत्रता को केवल राजनीतिक सत्ता-परिवर्तन नहीं मानते थे। उनके अनुसार यदि स्वतंत्रता के बाद भी सामाजिक असमानता और आर्थिक शोषण बना रहे, तो स्वतंत्रता अधूरी होगी (Narayan, 1978, p. 42)।

‘आजाद दस्ता’ के माध्यम से उन्होंने किसानों, मजदूरों और युवाओं को राजनीतिक रूप से सक्रिय करने का प्रयास किया। यह पहल स्वतंत्रता आंदोलन को व्यापक सामाजिक आधार प्रदान करने में महत्वपूर्ण सिद्ध हुई।

- **गांधीवाद और क्रांतिकारी प्रतिरोध का समन्वय**

जयप्रकाश नारायण गांधीजी के प्रति गहरा सम्मान रखते थे, किंतु वे यह भी मानते थे कि औपनिवेशिक सत्ता केवल नैतिक अपील से समाप्त नहीं होगी। इसलिए उन्होंने प्रत्यक्ष कार्रवाई की रणनीति अपनाई। हालांकि वे अंधाधुंध हिंसा के समर्थक नहीं थे।
‘आजाद दस्ता’ द्वारा रेलवे लाइन, डाक-तार व्यवस्था तथा प्रशासनिक संरचनाओं को बाधित करने की कार्रवाइयों का उद्देश्य ब्रिटिश शासन को कमजोर करना था, न कि व्यापक हिंसा फैलाना। इस प्रकार उनकी रणनीति गांधीवादी अहिंसा और क्रांतिकारी राजनीति के बीच एक व्यावहारिक समन्वय का उदाहरण थी।

बिहार में ‘आजाद दस्ता’ की गतिविधियाँ

बिहार 1942 के आंदोलन का सबसे सक्रिय केंद्र था। सारण, चंपारण, शाहाबाद, भागलपुर और मुंगेर जैसे जिलों में जनता ने व्यापक प्रतिरोध किया। कई स्थानों पर स्थानीय प्रशासन अस्थायी रूप से निष्क्रिय हो गया।
‘आजाद दस्ता’ ने गुप्त सभाओं, पर्चों और संदेशों के माध्यम से जनता को संगठित किया। संगठन ने रेलवे और संचार व्यवस्था को बाधित कर ब्रिटिश प्रशासन की नियंत्रण क्षमता को कमजोर करने का प्रयास किया।
नेपाल सीमा क्षेत्र संगठन के लिए रणनीतिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण था। यहाँ से संगठन सुरक्षित रूप से अपनी गतिविधियों का संचालन कर सकता था। ब्रिटिश प्रशासन के लिए इन क्षेत्रों में प्रभावी निगरानी स्थापित करना कठिन था।
हालाँकि संगठन को अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ा—संसाधनों की कमी, निरंतर पुलिस दमन और व्यापक गिरफ्तारियाँ। फिर भी यह संगठन आंदोलन की क्रांतिकारी ऊर्जा को बनाए रखने में सफल रहा।

ब्रिटिश दमन और प्रशासनिक प्रतिक्रिया

ब्रिटिश सरकार ने ‘आजाद दस्ता’ को गंभीर खतरे के रूप में देखा। पुलिस और खुफिया विभाग को विशेष अधिकार दिए गए। संदिग्ध व्यक्तियों की व्यापक निगरानी की गई तथा बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियाँ हुईं।
ब्रिटिश प्रशासन के अभिलेखों में जयप्रकाश नारायण को “dangerous underground agitator” कहा गया है (Government of India, 1943, p. 67)। इससे स्पष्ट होता है कि औपनिवेशिक सत्ता उन्हें केवल एक राजनीतिक कार्यकर्ता नहीं, बल्कि संगठित प्रतिरोध के प्रतीक के रूप में देखती थी।
1943 में जयप्रकाश नारायण की पुनः गिरफ्तारी ने भूमिगत आंदोलन को अस्थायी झटका दिया, किंतु आंदोलन की राजनीतिक चेतना को समाप्त नहीं किया जा सका।

आलोचनात्मक मूल्यांकन

‘आजाद दस्ता’ का ऐतिहासिक महत्व उसकी सैन्य क्षमता से अधिक उसके राजनीतिक और प्रतीकात्मक प्रभाव में निहित है। यह संगठन सीमित संसाधनों और क्षेत्रीय दायरे के बावजूद औपनिवेशिक शासन के विरुद्ध संगठित प्रतिरोध का प्रतीक बन गया।
हालाँकि इसकी कुछ सीमाएँ भी थीं। संगठन व्यापक राष्ट्रीय नेटवर्क विकसित नहीं कर सका और इसकी गतिविधियाँ मुख्यतः बिहार तथा नेपाल सीमा क्षेत्रों तक सीमित रहीं। इसके अतिरिक्त, गांधीवादी और समाजवादी रणनीतियों के बीच वैचारिक तनाव भी मौजूद था।
फिर भी ‘आजाद दस्ता’ ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में युवाओं और ग्रामीण समाज की भागीदारी को सशक्त किया। इसने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता आंदोलन केवल शहरी नेतृत्व तक सीमित नहीं था, बल्कि ग्रामीण भारत भी उसका सक्रिय भागीदार था।
जयप्रकाश नारायण की सबसे बड़ी विशेषता यह थी कि उन्होंने संघर्ष को नैतिकता, जन-संगठन और प्रत्यक्ष कार्रवाई के संतुलन पर आधारित किया। यही कारण है कि वे भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के सबसे बहुआयामी नेताओं में गिने जाते हैं।

निष्कर्ष

1942 का भारत छोड़ो आंदोलन भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष का निर्णायक अध्याय था। इस आंदोलन में 'आजाद दस्ता' और जयप्रकाश नारायण की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही। 'आजाद दस्ता' ने भूमिगत संगठन, विकेन्द्रित प्रतिरोध और जन-संगठन के माध्यम से ब्रिटिश शासन को चुनौती दी।

जयप्रकाश नारायण की रणनीति ने यह सिद्ध किया कि स्वतंत्रता आंदोलन को केवल नैतिक अपील तक सीमित नहीं रखा जा सकता; इसके लिए संगठित जन-प्रतिरोध और वैकल्पिक राजनीतिक संरचना की आवश्यकता होती है। उन्होंने गांधीवादी विचारधारा और समाजवादी प्रतिरोध के बीच एक व्यावहारिक समन्वय स्थापित किया।

यद्यपि 'आजाद दस्ता' संसाधनों और संगठनात्मक सीमाओं के कारण दीर्घकालिक सैन्य चुनौती नहीं बन सका, फिर भी उसका ऐतिहासिक महत्व अत्यंत व्यापक है। इस संगठन ने भारतीय युवाओं और ग्रामीण समाज में राजनीतिक चेतना को मजबूत किया तथा स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा प्रदान की।

संदर्भ सूची

Brown, J. M. (1994). *Modern India: The origins of an Asian democracy*. Oxford University Press.

Chandra, B. (1989). *India's struggle for independence*. Penguin Books.

Government of India. (1943). *Report on the disturbances during the Quit India Movement*. Government Press.

Guha, R. (2007). *India after Gandhi: The history of the world's largest democracy*. Picador.

Narayan, J. P. (1978). *Towards total revolution*. Popular Prakashan.

Nanda, B. R. (1994). *Mahatma Gandhi: A biography*. Oxford University Press.

Sarkar, S. (1983). *Modern India: 1885–1947*. Macmillan India.

Sen, S. N. (1997). *History of the freedom movement in India*. New Age International.

Singh, A. K. (2011). *Quit India Movement in Bihar*. Anamika Publishers.

Thapar, R. (2000). *A history of India* (Vol. 2). Penguin Books.

Varma, V. P. (2002). *Modern Indian political thought*. Lakshmi Narain Agarwal.

Zachariah, B. (2004). *Developing India: An intellectual and social history, c. 1930–50*. Oxford University Press.